UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180874

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82/V31K   Accession No. G.H.

Author वर्मा, वृन्दावनलाल ।

Title काश्मीर का काँटा । 1948

This book should be returned on or before the date last marked be

काश्मीर का कांटा

(ऐतिहासिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट

(लेखक—झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कचनार, मुसाहिबजू, गढ़-कुण्डार, बिराटा की पद्मिनी, अचल मेरा कोई, लगन, राखी की लाज, कुण्डली-चक्र आदि)

प्रथम संस्करण

'मयूर-प्रकाशन'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

मूल्य १)

प्रकाशक —
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल-एल. बी.
मयूर-प्रकाशन, झाँसी।

प्रथमावृत्ति—१९४८

अनुवाद और चित्रपट निर्माण आदि के सर्वाधिकार लेखक के अधीन हैं।

मूल्य—एक रुपया

मुद्रक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

दो शब्द

काश्मीर पर हमला एक संगठित षड़यंत्र है। कबीलाइयों की छाया में जो राजनैतिक पेंतरा है, निश्चय ही काश्मीर के, भारत के और एशिया के भविष्य पर उसका प्रभाव पड़ सकता है। वर्माजी ने इस नाटक में, बड़ी सुलझी भाषा में, रोचक ढंग से उसकी ओर संकेत किया है।

युक्तप्रांत के स्वास्थ्य और स्वायत्त-शासन-मंत्री माननीय श्री आत्माराम गोविंद जी खेर ने, जब प्रथमवार, २९-१२-४८ को, इस नाटक को देखा तब इसको बहुत पसंद किया। उन्होंने कहा था—'वर्मा जी ने हिन्दी की सेवा करके भारत का माथा ऊँचा किया है। उनका हिन्दी में विशिष्ट स्थान है। परन्तु वे जितने बड़े साधक हैं, कम लोग जानते हैं—उतने बड़े मानव भी हैं।'

१८ जनवरी' ४८ को युक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय श्री गोविंदबल्लभ जी पन्त ने भी इसको अभिनीत होते देखा था, उनकी सराहना मिली।

वर्मा जी की मानवता की साधना ही उनकी विभिन्न कृतियों में भिन्न-भिन्न रूप में झांकती है। हिन्दी पाठकों के सामने, वर्मा जी के स्वस्थ विचार, जो उनके स्वस्थ शरीर के अनुकूल ही हैं, प्रतिबिम्बित करते रहने का, कार्य हमारा है। दुख है, उसमें भी अनेक बाधाओं के कारण विलम्ब हो जाता है। हम प्रेमी पाठकों से उस विलम्ब के लिए क्षमा चाहते हैं।

विनीत—

झांसी

द्वारिकेश

परिचय

अक्टूबर सन् १९४७ की बात है जब पाकिस्तानियों और कबीलाइयों ने षड़यन्त्र करके काश्मीर पर कई मार्गों से हमला किया। काश्मीर की १२ हज़ार सेना को वहाँ का तत्कालीन दीवान पहले ही बिखेर चुका था। इस सेना के एक दस्ते का ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह था। वह १२ हज़ार आक्रमणकारियों का मुकाबिला करने के लिए अपनी छोटीसी सेना लेकर मुज़फ्फ़राबाद की दिशा में गया। मुज़फ्फ़राबाद में कबीलाइयों ने डुगडुगी पीट कर घोषणा की थी कि श्रीनगर में ईद मनाई जावेगी। ईद मनाने से उनका प्रयोजन क़तल, लूटमार और आग लगाने से था।

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह ने प्रण कर लिया था कि यह न होने पावेगा। लुटेरों ने ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह की छोटीसी सेना के मुसलमान सिपाहियों को बरगलाकर अपनी ओर फोड़ लिया। वे बेईमानी करके दुश्मनों से जा मिले। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह की सेना में लगभग १४० योद्धा रह गए और सामने नदी के पुल के उस पार, जो नमलापुल कहलाता है, बारह हज़ार सुसज्जित पाक़िस्तानी और कबीलाई !! वर्तमान युग के सभी हथियारों के साथ !!!

काश्मीर के महाराज ने उस समय तक यही निश्चय न कर पाया था कि क्या करें, हिन्दुस्थान से मिल जायँ, स्वतन्त्र होकर रहें या पाकिस्तान का आसरा पकड़ें।

परन्तु ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह और उसके सैनिकों के मन में अनिश्चय बिलकुल न था। वे अपने जीतेजी इन डाकुओं द्वारा श्रीनगर का विनाश न होने देने का प्रण कर चुके थे।

उनको कहीं से भी किसी प्रकार की सहायता की आशा न थी सब सहारे टूट चुके थे।

फिर भी इन वीरों ने देश-सेवा के लिए अपने सिरों पर कफ़न बाँधे। इनमें कुछ स्त्री-डाक्टर भी थीं। वीरता में वे अपने भाइयों से पीछे नहीं रहीं।

वे सब २४ अक्टूबर को युद्ध में बलिदान हो गए।

सम्पूर्ण निस्सहायता की भी परिस्थिति में इन स्त्री-पुरुषों ने जो जौहर दिखलाया वह सूरमाओं के इतिहास में स्वर्ण के अक्षरों में लिखने योग्य है। वह वीरता अनुपम थी। काश्मीर क्या, भारत भर उन वीरों का चिरकृतज्ञ रहेगा।

'काश्मीर का कांटा' एकाङ्की नाटक में इसी चमत्कारपूर्ण देश-सेवा की कहानी है।

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र—

पुरुष—

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह
मेजर भीमसिंह
अर्दली
दो कैदी

स्त्री—

कैप्टिन पार्वती (डॉक्टर)
कैप्टिन गौरी (डॉक्टर)

अभिनय के पात्र

पहलीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कञ्चन

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू

(भू० पू० उपनिर्देशक न्यू-थिएटर्स)

मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०

कैप्टेन पार्वती—सुश्री गान्धारी जौहरी

कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सक्सेना

अर्दली—श्री दशरथराव पवार

पहला कैदी—श्री महावीरप्रसाद अग्निहोत्री,

बी० एस० सी० एल-एल० बी०

दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०

दूसरीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कञ्चन

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू

(भू० पू० उपनिर्देशक न्यू-थिएटर्स)

मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी

कैप्टेन पार्वती—सुश्री सरला गुप्त

कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सक्सेना

अर्दली—श्री दशरथराव पवार

पहला कैदी—श्री छोटेलाल पांडे

दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०

काश्मीर का कांटा

[स्थान—काश्मीर का पहाड़ी भाग—उडी के पास, नमला पुल के बिलकुल निकट। बिखरे हुए ऊंचे-नीचे पहाड़ों के बीच में नदी, नाले और झरने। इधर-उधर हरे-भरे विशाल पेड़, रङ्ग बिरङ्गे फूलों से लदे हुए छोटे-बड़े पौधे और एक ओर सेब का उजड़ा हुआ बाग। कुछ दूरी पर एक छोटासा अधजला गांव। उसके पास रौंदे हुए हरे खेत। एक ओर से साफ-सुथरा राजमार्ग आया है जिसके दोनों ओर सनोबर के ऊँचे-ऊँचे पेड़ हैं। यह मार्ग पहाड़ों में होकर आगे चला गया है और पुलपर से नदी को पार करता है। समय—क्वांर के शुक्लपक्ष के अन्तिम सप्ताह की रात्रि। चांदनी में दूर के पहाड़ की चोटी पर हिम झिलमिला रही है। पहाड़ियों की ओट लिए हुए काश्मीरी सेना टोलियां बांधे हुए इधर-उधर गढ़ों और खाइयों में मोर्चे लगाकर पड़ी हुई है, मानो आक्रमणकारियों पर टूट पड़ने की घात में हो। इस काश्मीरी सेना की भिन्न-भिन्न टोलियों का सेनानायक के एक छोटे से तम्बू के साथ सम्बन्ध है जो एक ओट में खड़ा कर लिया गया है। तम्बू एक ओर से खुला है। सेनानायक ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह, तम्बू में, काठ की कुर्सी पर बैठा हुआ है। अगल-बगल में काठ की कुर्सियां पड़ी हुई हैं। सामने छोटी सी मेज है जिसपर टेलीफोन लगा हुआ है और कुछ कागज रक्खे हैं। इस टेलीफोन का सम्बन्ध श्रीनगर से भी है। ब्रिगेडियर फोन को कान से लगाए है और कुछ चिन्तित दिखलाई पड़ता है। वह टेलीफोन की डांडी पर बार बार उँगलियां पटकता है, पर उसको श्रीनगर से कोई उत्तर नहीं मिलता। वह झल्लाकर फोन को मेज पर रख

देता है और खड़ा हो जाता है। ब्रिगेडियर सुन्दर आकृति का पुष्टदेह सैनिक है।]

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—अर्दली ! अर्दली !!

(अर्दली का प्रवेश)

अर्दली—आज्ञा।

ब्रिगेडियर—कोई आहट मिल रही है ?

अर्दली—कोई भी नहीं।

ब्रिगेडियर—मेजर भीमसिंह को भेजो। अपने तम्बू में होंगे।

अर्दली—मेजर भीमसिंह, पुल के पास वाली पहाड़ी पर, टोली नम्बर १० को देखने के लिये गए हैं।

ब्रिगेडियर—कितनी देर हुई ?

अर्दली—यहां पहुंच गए होंगे।

ब्रिगेडियर—अच्छा जाओ।

(अर्दली जाता है)

ब्रिगेडियर—(टेलीफ़ोन को उठा कर और टोली नम्बर १० के फ़ोन से संयुक्त करके) देखिए—हां—मेजर भीमसिंह—क्या ? हां—तोप का ठिया ठीक कर रहे हैं ?—पहले क्या ठिया ग़लत था ?—हूँ—अच्छा, बदलने की जरूरत पड़ी है—हां—क्या कहा ?—सब चले गए हैं ?—कम से कम इनको मैं ईमानदार समझता था। हूँ—हथियार भी ले गए। ओफ़ !! परन्तु परवाह मत करो। और भी दृढ़ हो जाओ। तुम सब कितने रह गए हो ?—एं ! केवल ग्यारह ! —हूँ—अच्छा—मैं और सिपाही भेजता हूँ। मेजर भीमसिंह को जल्दी लौटने को कहो। हां—(टेलीफ़ोन को रख देता है और मेज पर रक्खे हुये एक समाचारपत्र को विचलता में उठाता है और कुछ क्षण टहलता है। फिर पत्र पर आंखें घुमाता है। परन्तु वह समाचार या लेख

नहीं पढ़ता, विज्ञापन स्तम्भों में से एक विज्ञापन को पढ़ता है पढ़ता जाता है और बहुत बेसुरे ढङ्ग से गुनगुनाता है)

तारे कहते रात से कहां चांदनी छुटकी ?
नीले नभ को छोड़ कर किस कोने में भटकी ?

क्या बढ़िया विज्ञापन निकलने लगे हैं पत्रों में ! —(पढ़ता है) एक बहुत ही सुन्दर कुआंरी लड़की चाहिये, जिसका बाप, बहुत रुपये वाला हो, —ऐसे लड़के के लिए, जिसका बाप करोड़पति है। ह ! ह !! ह !!! अर्दली, अर्दली।

(अर्दली आता है)

अर्दली—आज्ञा जनरल साहब।

ब्रिगेडियर - तुम ब्याह करना चाहते हो ?

अर्दली ब्याह जनरल साहब !

ब्रिगेडियर—हां जी। (समाचार पत्र पर दृष्टि घुमाते हुये) देखो न, इसमें एक विज्ञापन और है—(पढ़ता है) - लड़की बहुत पढ़ी लिखी, और अत्यन्त सुन्दर। अखबार के द्वारा, प्रेम-लीला और भांवर के ज़रिए जन्म भर के लिए युगल जोड़ी !!

अर्दली—ब्याह जनरल साहब !!! मुज़फ्फराबाद में कबीलाई पठानों ने, डुगडुगी पीटी है कि श्रीनगर में ईद मनाएंगे। ब्याह !!!! ब्याह कैसा !

ब्रिगेडियर—इसी अखबार में कबीलाइयों की वह घोषणा भी छपी है। हमको तुमको भी कोई बड़ा उत्सव मनाना चाहिए। समझे ! क्या समझे !

अर्दली—आज्ञा ! कबीलाई बरफ़ की आंधी की तरह भरभराते चले आरहे हैं। माफ़ करें तो विनती करूँ—यह उत्सव मनाने का समय नहीं है—हम लोगों ने तो मौत के साथ उत्सव मनाने की ठानी है।

ब्रिगेडियर—(हँसते हुए खड़े होकर) शाबाश; धन्य मेरे सिपाही। ब्याह से मेरा मतलब इसी प्रण से है।

(टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है)

शायद श्रीनगर से कुछ सेना सहायता के लिए आ रही है। (उदास स्वर में) आवे और न आवे। वहां होगी भी कितनी?

(घंटी फिर बजती है)

ब्रिगेडियर—(फोन को कान से लगाकर) जी, मैं ही हूँ—जी राजेन्द्रसिंह। श्रीनगर से सेना बिल्कुल नहीं भेजी जा सकती!! हूँ। —खैर। हूँ—श्रीनगर और बारामूला के बीच के रास्ता और फोन की रखवाली के लिए थोड़े से ही सिपाही हैं। उनको ड्यूटी पर से नहीं हटाया जा सकता। —जी—अभी नमता पुल सुरक्षित है। कबीलाई—लुटेरे—पुल को पार नहीं कर पाए हैं। पुल को तोड़ देना चाहता हूँ, परन्तु गांठ में डाइनामाईट बिलकुल नहीं है। क्या आप थोड़ा सा भेज सकते हैं? हूँ—नहीं भेज सकते, तो जाने दीजिए। खैर। जी! —हूँ—हम कुल एक सौ बयालीस रह गए हैं। हमारे जितने मुसलमान सिपाही थे सब के सब लुटेरों से जा मिले हैं—पहले ही सूचना दे दी थी। जी—हिन्दुस्थान से मदद नहीं आ रही है? हूँ—अभी हिन्दुस्थान सरकार के साथ शामिल होने की बातचीत ही चल रही है!! कुछ तै नहीं हुआ? हूँ—खैर। हूँ—जब तक हम लोगों में से एक भी ज़िन्दा है, तब तक कबीलाई पुल के इस पार नहीं आ सकेंगे। जी हां—जरूर.? (हँसकर) हमारा अर्दली ब्याह करने जा रहा है। हां—हां, सच मानिए और हम सबके सब ब्याह करने जा रहे हैं—(और भी जोर के साथ हँसकर) बरात अमरपुरी जायगी। अमरपुरी। दुलहिन का नाम है मौत—जी ठीक कहता हूं। उसके बराबर सुन्दर और कोई दुलहिन नहीं। इतनी सुन्दर कि अख़बार वाले उसकी शादी का विज्ञापन कितने भी दामों कभी पहले से नहीं छापेंगे। (हँसते हुए ही) हां, भांवर पड़ जानेपर फिर

मुफ्त में छाप देंगे। (नेपथ्य में धड़ाके की आवाज़ होती है) पड़ोस में कुछ गड़बड़ है। महाराज कहां हैं? जी?—अच्छा! हूँ—हां • आप —महाराज से नमस्ते कह दीजिएगा।—धन्यवाद। हम सब एक सौ बयालीस सिपाहियों का। हूं—घबराइए नहीं। हां—ग़लत नहीं कह रहा हूँ। धन्यवाद। सारे काश्मीर को हम लोगों का नमस्ते, और यदि काश्मीर हिन्दुस्थान में मिल जाय तो उसको भी। नमस्ते, नमस्ते। (टेलीफोन रख देता है) अर्दली! अरे तुम यहीं खड़े थे!! कोई हर्ज़ नहीं, कोई हर्ज़ नहीं। हम सब के सब दूल्हा हैं और सबके सब बराती!!!

अर्दली—जनरल साहब, मैं अदब-कायदा, शासन डिस्पिलिन सब भूल गया था। क्षमा किया जाऊँ।

जनरल—मैं भी सब भूल गया। (हँसकर) अब ब्याह होने में ज़्यादा देर नहीं हैं। (टहलते हुए) ब्याह के पहले दूल्हा शासन-वासन सब भूल जाता है। समाचार पत्रों के ज़रिये ब्याह छिपलुक कर होता है और हम लोग खोलकर और मन भरके करेंगे। ब्रिगेडियर और अर्दली में कोई अन्तर नहीं। अच्छा, डाक्टर पार्वती देवी और डाक्टर गौरीदेवी को भेजो। (बैठ जाता है)

अर्दली—जो आज्ञा। (प्रसन्न जाता है)

(पार्वती और गौरी आती हैं। दोनों युवतियां हैं और सुन्दर। राजेन्द्रसिंह अभिवादन के लिए खड़ा हो जाता और उनको बिठला लेता है। ज़रा बारीकी के साथ देखने पर साफ़ मालूम हो जाता है कि वे दोनों कई रात से नहीं सोई हैं)

ब्रिगेडियर—देवी पार्वती अब अस्पताल की ज़रूरत नहीं रहेगी—देवी गौरी—

पार्वती—क्यों जनरल साहब? क्या इस स्थान को छोड़ रहे हैं! सहस्रों की संख्या में कबीलाई लुटेरे पुल पर से पिल पड़ेंगे और तुरन्त बारामूला को अधिकार में कर लेंगे। फिर श्रीनगर की कुशल कहां?

ब्रिगेडियर—अस्पताल नहीं रहेगा; और अभी कबीलाइयों को लोहे के चने चबाने बाक़ी हैं। देवी गौरी और आप दोनों, अस्पताली सामान के साथ तुरन्त श्रीनगर जाइए।

गौरी—समझ में नहीं आया।

ब्रिगेडियर—मेरा आदेश बिलकुल स्पष्ट है। आप लोगों की ज़रूरत नहीं है।

दोनों—बिलकुल समझ में नहीं आया।

ब्रिगेडियर—और न किसी अस्पताली सामान की ज़रूरत है।

(वे दोनों एक दूसरे का मुंह देखने लगती हैं)

दोनों—बात क्या है!

ब्रिगेडियर—बात बिलकुल साफ़ है। (हंसते हुए) आप लोग घायलों की ही तो मरहम पट्टी और देखभाल करती हैं न? मरे हुओं पर तो आपका कोई उपाय है ही नहीं। हमारी इस टुकड़ी में अब कोई भी घायल नहीं होगा।

पार्वती—आप बहुत जागे हैं। थोड़ा सा सो लीजिये।

ब्रिगेडियर—और हम सब के सब दूल्हा बनने जा रहे हैं। ह! ह!! ह!!! ह!!!!

गौरी—मैं भी यही कहने वाली थी। सो लेने से जी हल्का हो जायगा। दिमाग़ में ठंडक देने वाली मैं कोई दवा बनाए लाती हूँ।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) आप समझती हैं कि मेरे दिमाग़ में कुछ फ़ितूर होगया है। बिलकुल सम्भव है। परन्तु जितनी ठण्डक आज तीन रातों के जागरण पर भी मन में पा रहा हूँ उतनी कभी मन में अनुभव नहीं की थी। हम लोगों में से अब कोई घायल नहीं होगा—हम सब मरने जा रहे हैं। (और भी हँसकर) हमारी लाशों की भी कोई चिन्ता नहीं की जानी चाहिए। कबीलाई लुटेरे श्रीनगर में ईद नहीं मना

सकेंगे। नहीं मना सकेंगे। उनको हमारी लाशों पर ईद मनानी होगी। अब आया आपकी समझ में ?

दोनों—ऐं !!!

ब्रिगेडियर—हां। सीमान्त और पाकिस्तान के तोते अपने यहां के अनार छोड़ कर काश्मीर के अखरोट तोड़ने आरहे हैं ! आप लोगों की और आपके सहायकों की तथा किसी भी अस्पताली सामान की ज़रूरत नहीं। इसको बचा ले जाइये। यदि काश्मीर हिन्दुस्थान में शामिल हो गया और काश्मीर की सहायता के लिए हमारे हिन्दुस्थानी भाई आगये तो वह सामान उनके काम में आवेगा।

गौरी—(कण्ठावरोध के साथ) काश्मीर हिन्दुस्थान से कटकर नहीं रह सकता। महाराज भले ही सोच विचार की धार में पड़े हों, परन्तु महारानी साहब के निर्णय और निश्चय में कोई सन्देह नहीं।

ब्रिगेडियर—तो उनके निश्चय को और भी दृढ़ करने के लिये और उस निश्चय को कार्य का रूप दिलवाने के लिये जाइए न यहां से ! अभी मार्ग और टेलीफोन बचे हुए हैं। हमारे हाथ में मोटर लारियां हैं। सब सामान के साथ जाइये। यदि महारानी साहब का निश्चय फली-भूत होगया तो हम एक सौ बयालीस सिपाहियों का मरना व्यर्थ नहीं जायगा। हिन्दुस्थान से हवाई बेड़ा और भूमि-सेना आवेगी। बख्तरी गाड़ियां, और टैंक, तोपें, बम इत्यादि। (दांत पीस कर) फिर कबीला-इयों को आटा दाल का भाव मालूम पड़ेगा।

पार्वती—जनरल साहब, हम लोग आपके साथ काश्मीर के लिए अपना बलिदान करेंगी।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) क्या ! ओफ़ !! क्या कहती हो देवियो ? हम पुरुषों के जीतेजी स्त्रियां बलिदान होंगी !! यह नदी, यह निर्झर, ये हरे-भरे विशाल पेड़, ये रंग-बिरंगे फूल, फलों से लदे हुए वे सेब के बाग़, धान के हरे-भरे खेत, उनमें काम करने वाले किसान-मज़दूर और

खेलने वाले बच्चे राख कर दिए जायँ हम पुरुषों के जीतेजी !!! स्त्रियां बलिदान करेंगी, तब पुरुषों को धिक्कार है !!!! (ठण्डक के साथ) और देखो डॉक्टर, सिपाही तो थोड़े दिनों की क़वायद-परेड और छावनी की रपटा-रपटी में मारने-मरने योग्य बन जाता है, परन्तु डाक्टर ? और नर्स ? ये तो थोड़े समय में नहीं बनाए जासकते। नहीं। नहीं। आपलोगों को जाना ही होगा।

दोनों—हमलोग नहीं जायँगी।

ब्रिगेडियर मेरी आज्ञा है। आप आज्ञा का उल्लंघन करेंगी तो कोर्टमार्शल करके सज़ा दूंगा—(हँसकर) परिणाम एक ही - लारी में बन्द करके भेज दूँगा। (गम्भीर होकर) परन्तु एक उलझन हो जायगी। पहरे के लिए सिपाही भेजने पड़ेंगे। हम उतने कम हो जायँगे और फिर जिन सिपाहियों ने सुरपुरी में मौत के साथ ब्याह करने की ठानी है, क्या वे जायँगे ?

(टेलीफोन की घण्टी बजती है। ब्रिगेडियर फोन को हाथ में लेता है)

ब्रिगेडियर—हूं। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह। अच्छा, मेजर भीमसिंह टोली नम्बर दस की पहाड़ी से बोल रहे हो ? क्या हाल है ? हूँ—ओह ! कबीलाई पुल के पास आ गए थे ! हूँ—धमाका हमने भी सुना था। अच्छा। बहुत अच्छा। पीछे हटा दिए गए ! आप थोड़ी देर के लिए यहां आजाइए। एक योजना बनानी है। क्या ? कबीलाइयों के पास टैंक भी हैं ? खैर, कोई बात नहीं। उनका हर हालत में मुक़ाबिला करना है। क्या ? हूँ।—हूं—अभी नहीं आसकते !—अरे नहीं। इतनी जल्दी प्राण मत दो भाई। कबीलाइयों और उनके पाकिस्तानी हिमायतियों से बहुत-बहुत क़ीमत वसूल करके तब प्राण देंगे।—हूँ—तुम नहीं आ सकते तो मैं आता हूँ। नए मोर्चों को देखना चाहता हूँ।

(टेलीफ़ोन रख देता है)

पार्वती—आप कहां जा रहे हैं ?

ब्रिगेडियर—(हँसकर) चिन्ता मत करिए। अभी घड़ी नहीं आई है, परन्तु दस–पांच घण्टे के भीतर आयगी। मैं मेजर भीमसिंह के पास जारहा हूँ। श्रीनगर से फ़ोन पर कोई बुलावा आवे तो आप बातचीत करना और मुझको टोली नम्बर दस से बुला लेना।

(जाता है)

गौरी—इनके निश्चय की दृढ़ता में कोई सन्देह नहीं जान पड़ता, पार्वती।

पार्वती—परन्तु हमलोग इनको बिना किसी अस्पताली सहायता के यों ही छोड़कर नहीं जायँगी, गौरी। हमलोग उनके निश्चय की परवाह नहीं करेंगी।

गौरी—मैं ब्रिगेडियर के दूसरे निश्चय की बात कर रही हूँ पार्वती। उन्होंने आत्म बलिदान का निश्चय कर लिया है। उनको बचाना चाहिए। जनरल में साधारण सैनिक जैसा दुस्साहस नहीं होना चाहिए।

पार्वती—मैं भी यही कहती हूँ—सेनानायक ने यदि अपने को समाप्त कर दिया तो सेना का संचालन कौन करेगा ? पर यहां पर स्थिति ही दूसरी है।

गौरी—काश्मीर में बारह हज़ार की गिनती में सेना है, परन्तु नासमझ दीवान ने या विकट स्थिति ने इस सेना के खण्ड खण्ड करके ग़लत जगहों पर इधर उधर भेज दिया है।

पार्वती—दीवान को तो महाराज ने हटा दिया है, परन्तु सेनाओं के खण्ड अब इखरे-बिखरे अड्डों पर से वहां नहीं लाये जा सकते। मैं सोचती हूँ दीवान को नासमझ बनने ही क्यों दिया गया ! कमसे कम एक महीने से भारत सरकार प्रबोधन कर रही है। पाकिस्तानी शासकों ने लाहौर में अफ़रीदियों के सरदारों को बुलाकर पन्द्रह हज़ार कबीलाइयों की सेना संगठित करने की योजना बनाई, तब भारत सरकार ने महाराज

को सूचना देदी; जब राज्य के कुछ मुख्य कर्मचारियों ने राज-द्रोह और देशद्रोह करके काश्मीर को भारत से काटकर अनजाने प्रवाह में फेंक—बहा देने का षडयंत्र रचा, तब सूचना देदी—

गौरी—कबीलाई तथा पाकिस्तान के सीमाप्रांती सहस्रों की संख्या में जो तीन महीने से बराबर हमारे काश्मीर की केसर-क्यारियों में सांप की तरह घुमते चले आ रहे हैं वह भी शासक वर्ग को तुरन्त सचेत न कर सका !!! सब जानते हुए भी, सब समझते हुए भी।

पार्वती गौरी, इस सुन्दर भूमि का कुछ दुर्भाग्य है। महाराज अभी तक निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि पाकिस्तान में मिलें या हिन्दुस्थान में, अथवा स्वतन्त्र बने रहें !

गौरी—स्वतंत्र ! धनबल और जनबल के हिसाब से काश्मीर बहुत छोटा सा प्रदेश है। उसका सुहावनापन सदा से लुटेरों और हत्यारों को न्यौता देता आया है।

पार्वती—इस युग में कोई भी देश अकेला पड़ जाने की मूर्खता नहीं कर सकता। काश्मीर की सीमा से अफ़ग़ानिस्तान, रूस, चीन और तिब्बत लगे हुए हैं—

गौरी—और लुटेरों तथा हत्यारों को रास्ता देने वाला पाकिस्तान भी।

पार्वती—वह जंगली चूंसा और छाती का कांटा तो सैकड़ों मील की लम्बाई तक काश्मीर की सीमा से लगा हुआ है।

गौरी—पाकिस्तान और हिन्दुस्थान शायद फिर कभी एक हो जायं।

पार्वती—गौरी, यह अपने को धोखा देने वालों का स्वप्न है। हिन्दुस्थान तो पाकिस्ताम का मित्र बन कर रहना चाहता है, परन्तु पाकिस्तान उस तरह का बर्ताव कर रहा है जैसा हिलते हुए दांतों वाली कोई बुढ़िया ओठों से काटखाने का प्रयत्न करे। एक कैसे हो सकते हैं ये दोनों !

गौरी — इस पर भी महाराज, अभी तक तै नहीं कर पाए हैं कि क्या करें !

पार्वती—सीधी तो बात है। पाकिस्तानियों ने कह दिया कि राजाओं और नवाबों को अबाध अधिकार है कि वे चाहे कुछ करें, जनता के मत की कोई परवाह नहीं। भारत कहता है कि राजाओं के अधिकार का उद्गम जनमत है। कश्मीर का शासन जन-मत के नेताओं को कैदखाने में डाले है; भारत के साथ शामिल होने की जो एकमात्र शर्त है उसको वह मानता नहीं। इसीलिए सब ढुलमुलपन है।

गौरी—इधर पाकिस्तान ने काश्मीर को दबोचने में कोई भी कसर नहीं लगाई है। राज्य में बागियों का एक दल खड़ा कर दिया है — पहला कदम पाकिस्तान में शामिल होना, दूसरा राजा को गद्दी से उतार कर अलग कर देना और तीसरा पाकिस्तान के भुक्खड़ों तथा सरहद्दी लुटेरों और हत्यारों से काश्मीर और जम्बू के हरे भरे मैदानों को भर देना। फिर भारत के ऊपर निरन्तर आक्रमण करते कराते रहना।

पार्वती—ओफ़ ! गौरी, तुम श्रीनगर को फ़ोन करो। महारानी साहब से बात करो। उनसे कहो कि स्थिति भयङ्कर है, वे महाराज को भारत के साथ मिल जाने के लिए विवश करें; एक एक क्षण महत्व का है। करो फ़ोन।

(गौरी फ़ोन करती है, परन्तु कोई उत्तर नहीं मिलता)

गौरी—पार्वती, फ़ोन पर तो कोई बोलता ही नहीं। जान पड़ता है किसी ने फ़ोन का तार कहीं बीच से काट दिया है।

पार्वती—ऐं ! अब क्या होगा ? ब्रिगेडियर ठीक कहते थे, गौरी—हम सबको मारने और मरने के लिए तैयार होजाना चाहिए।

गौरी — पार्वती, उतावली मत होओ। मेरी एक बात सुनो। तुम तुरन्त श्रीनगर जाओ। अभी थोड़ासा समय है। श्रीनगर यहां से लगभग पचपन मील है। दो-तीन घण्टे में पहुंच जाओगी। महारानी साहब से

कहना कि उनकी डाक्टर गौरीदेवी मरते समय प्रार्थना कर गई है कि महाराज तुरन्त दिल्ली जायँ, भारतसंघ में शामिल होजायँ। वे हिन्दुस्थानी सेना की सहायता लें; फिर जैसे ही हवाई गाड़ियों के बममार बारामूला, उड़ी, कोहाला और नमला पर उड़े कि कबीलाइयों और उनके हिमायतियों के देवता कूच कर जायंगे।

पार्वती—मैंने धीरज के साथ तुम्हारी बात को सुन लिया गौरी। मैं यहां से नहीं जाऊँगी, चाहे पृथ्वी इधर की उधर हो जाय और चाहे कोर्टमार्शल का बाप मेरे सिर पर बिठला दिया जाय। महारानी साहब के पास तुम्हारी पहुंच है। तुम्हीं जाओ।

गौरी—तुम यहां अकेली क्या करोगी पार्वती? इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे अफ़सरों और सिपाहियों ने अपने सिरों पर कफ़न बांध लिए हैं। उनको अब किसी डाक्टर, नर्स या दवा की ज़रूरत नहीं।

पार्वती—मैं अकेली!!! (हँसकर) अकेली नहीं हूँ और न रहूंगी। मेरे साथ में सीता, सावित्री, गौरी झांसी की रानी और अनेक देवियां होंगी। विश्वास रक्खो, मैं बहुतसे लुटेरों को बन्दूक़ के घाट उतारूँगी।

गौरी—(घबराकर) और यदि तुम पकड़ली गईं तो?

पार्वती—वाह गौरी! वाह!! क्या हिन्दू नारी को यह भी सिखलाने की ज़रूरत है कि वह ऐसी अवस्था में क्या करे? (रिवाल्वर निकालकर) मेरा यह तमञ्चा रणक्षेत्र में सदा साथ रहता रहा है। एक गोली छोड़ूँगी आक्रमणकारी के ऊपर और दूसरी छोड़ूँगी अपनी कनपटी पर।

(फोन की घण्टी बजती है)

गौरी— प्रसन्न होकर) वह भ्रम ग़लत था। श्रीनगर से समाचार आरहा है। सुनूं क्या बात है। (फ़ोन को कान से लगाती है) जी—मैं हूँ डाक्टर गौरी देवी। आप श्रीनगर से बोल रहे हैं? क्या? टोली नम्बर दस से? हूं—हां—आप—आप? ब्रिगेडियर जनरल साहब?

अच्छा। हूं—श्रीनगर से कोई समाचार नहीं आरहा है। जब आपने खटखटाया तो मैं समझी थी कि श्रीनगर से कोई बोल रहा है।··जी नहीं··मालूम होता है कि श्रीनगर में या तो टेलीफ़ोन एक्सचेञ्ज पर कोई है नहीं, या शायद बीच में से किसी ने तार काट दिया है। जी?—हूँ—मैंने विचार बदल दिया है। श्रीनगर जाने के लिए तैयार हूँ। जी? अच्छा। आप आरहे हैं। मैं तैयार होती हूँ जाने के लिए।

(टेलीफोन रख देती है)

गौरी—पार्वती, तुमको अकेली छोड़ कर मेरा जी उमेंठ सी खा रहा है। केसरिया काश्मीर उसी के फूलों के रक्त से संजोया जायगा!! पार्वती, (गद्‌गद् होकर) मैं अकेली नहीं जाना चाहती।

पार्वती—तुम असल में डरती हो। डरपोक हो!!

गौरी—(तिनक कर) मैं डरपोक हूँ! (तमन्चे पर हाथ रख कर) मेरे पास तमन्चा है और उसका उपयोग भी जानती हूं।

पार्वती—(मुस्करा कर) तब मुझको यहां अकेली समझने की भूल मत करो।

गौरी—अच्छा। अच्छा। पार्वती, मुझको आशा है कि भारत से सेना हम लोगों की सहायता और रक्षा के लिए आवेगी।

पार्वती—आवे, चाहे न आवे, मेरे निश्चय में अंतर नहीं पड़ने का काश्मीर की रक्षा करने में भारत अपनी ही तो रक्षा करेगा।

गौरी—जैसे अंग्रेज लोग सीमांत की रक्षा करके अपने सम्पूर्ण अधिकार की रक्षा करते थे। वे तो कबीलाइयों को रुपया पैसा भी दिया करते थे। लाखों रुपए साल, कई लाख रुपये हरसाल!

पार्वती—(क्रुद्ध कर) सांपों को दूध पिलाते थे सांपों को दूध। उससे क्या उनका जहर कभी कम हुआ? लुटेरों और हत्यारों को मधुपर्क पिलाने का आदर नहीं मिलना चाहिए। उनको तो गोलियां और बम खिलाना चाहिए। तब कहीं वे अपने पिशाचपने से कुंठित हो सकते हैं।

गौरी—भारतीय सेना उनका यही सत्कार करेगी।

पार्वती (उदास स्वर में) गौरी, शायद ऐसा हो सके। परन्तु भारत भी तो बहुत समृद्ध देश नहीं है। और काश्मीर का यह काँटा अनन्तकाल के लिए है। भारत की गाँठ में युद्ध के जो साधन हैं वे परमित हैं।

गौरी—भारत के साधन चाहे परमित हों। पर उसके उत्साह की कोई हद नहीं, और जैसे पानी के बादलों में से बिजली उत्पन्न हो जाती है उसी तरह भारत का सुदर्शन चक्र वज्रों की भी वर्षा कर सकता है।

पार्वती—यह ठीक है गौरी, परन्तु काश्मीरियों को स्वयं भी तैयार होना चाहिए।

गौरी—काश्मीर के दो दल आपस के झगड़ों के कारण उन्नति के अवरोधक हैं।

पार्वती—एक दल लुटेरों से जा मिला है। इसी दल के समर्थक मुसलमान सिपाही काश्मीर की सेना में थे जो देश-द्रोह, राज-द्रोह और धर्म-द्रोह करके लुटेरों में शामिल होगए हैं।

गौरी—परन्तु एक दल तो मुसलमानों का ऐसा है जो काश्मीर भक्त हैं।

पार्वती—उस दल में बहुत से हिन्दू भी हैं, परन्तु उनके नेता कैदखाने में पड़े हैं। गौरी, मैं तुमसे अनुरोध करती हूं—महारानी साहब से प्रार्थना करना, अवसर मिले तो महाराज से भी विनती करना कि इस दल के नेताओं को छुटकारा देदें और शासन में उनको घुला मिला लें।

गौरी—महारानी साहब की राय पहले से ही स्पष्ट रही है।

पार्वती—गौरी जहां विवेकमय शक्ति नहीं, वहां कष्ट और विनाश के सिवाय और कोई परिणाम नहीं हो सकता। सारे देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए।

गौरी—हां पार्वती। मैं जाकर महारानी साहब से यह भी कहूँगी कि कैदखानों में पड़े हुए देश-भक्तों को छुटकारा दिलावें, उनको शासन में अधिकार दें और भारतीय संघ में काश्मीर को मिलवा दें, तथा काश्मीरी स्त्री पुरुषों को हथियार देकर आक्रमण करने और अपनी रक्षा करने के योग्य बनावें।

पार्वती—स्त्रियों को मारने के लिए और मरने के लिए तैयार करें —वे स्वयं उनका नेतृत्व करें, महारानी साहब स्वयं। समझी गौरी!

गौरी—अवश्य, मैं स्वयं इस काम को पूरी लगन के साथ करूँगी। कहीं तुम भी मेरे साथ होती पार्वती?

पार्वती—फिर वही मोह! झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का हाल हमने तुमने पढ़ा है। वे वीर थीं और गीता की भक्त। वे कभी मोह में नहीं पड़ीं।

गौरी - हां, पार्वती—हम सब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बनने का उद्योग करेंगी। नागिनें बनकर अत्याचारी आक्रमणकारियों को डसेंगीं; विश्वास रक्खो। संसार भर हमारे वीर कर्म और त्याग धर्म को देखेगा और हमारी पुकार को सुनेगा।

पार्वती—सुनेगा। पर हर हालत में हमारा कर्तव्य निश्चित है। (नेपथ्य में आहट पाकर) शायद ब्रिगेडियर जनरल साहब आ रहे हैं।

[ब्रि० राजेन्द्रसिंह और मेजर भीमसिंह का प्रवेश। मेजर भीमसिंह अधेड़ अवस्था का सतर्क और छरेरा सैनिक है। वह पार्वती और गौरी का अभिवादन करता है। दोनों बैठ जाते हैं। थके हुए से हैं, परन्तु उनकी आंखों में तेज और निश्चय है]

ब्रिगेडियर—आप जा रही हैं डाक्टर गौरी—ठीक है। और आप भी डाक्टर पार्वती?

पार्वती—जी नहीं।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) कोर्ट मार्शल करूंगा आपका।

पार्वती—या पोस्ट मार्टम* ? (हँसती है)

ब्रिगेडियर – (गंभीर होकर) मरने की भावना रखने वालों का अन्तर कितनी जल्दी मिट जाता है ! (मुस्कराकर) शायद पोस्ट मारटम किसी का भी न होगा ।

गौरी—मैं चाहती हूँ कि मैं भी इसी रण-क्षेत्र में प्राण देती ।

पार्वती—श्रीनगर जाकर जो अत्यन्त जरूरी काम करने हैं उनको मानो तुम्हारे सामने कोई महत्व ही नहीं । मरने को तो असमर्थ और निहत्थे ठाना करते हैं । मैं तो यहां मारने के लिए रुक रही हूँ ।

ब्रिगेडियर—हमारे शासकों से निवेदन करना डाक्टर गौरी कि काश्मीर या हिन्दुस्थान शांति के समय की ढीली ढाली आदतों से नहीं बचाया जा सकता । तीव्र और प्रबल उपाय काम में लाए बिना किसी की भी कुशल नहीं ।

मेजर भीमसिंह—इस ओर रुझान किसीका भी नज़र नहीं आता । हमारे उच्च और उदार नेता हिटलर की तरह के निष्ठुर और स्वार्थमग्न लोगों के लिए ज़रूरत से ज्यादा भले हैं । रंगे सियारों को समझा बुझा-कर उनकी राय बदलने की कोशिश करना बेकार है ।

ब्रिगेडियर—ठीक है । एक समय था जब देश-द्रोही दुश्मनों की लल्लो चप्पो करने के लिए कुछ कारण भी था, परन्तु अब शांति और सान्त्वना तथा प्रसन्न करने की नीति से सिवाय नुक़सान के और कोई परिणाम न होगा । महाराज जनता के नायकों को अपने साथ लें और अपनी जनता के होकर रहें । कह देना कि मरने के पहले उनके सारे सिपाहियों की यही पुकार थी ।

पार्वती—मैं इनको यह सब समझा चुकी हूँ ।

ब्रिगेडियर—(अनसुनी सी करके) मुस्लिम कान्फ्रेंस और उसके नेताओं की खुशामद बन्द करदें । इन्हीं लोगों ने हमारी सेना के मुसलमान

* शव-परीक्षा ।

सिपाहियों को बरगलाया और उनसे बेईमानी करवाकर आक्रमण-कारियों के पक्ष में मिलवाया। ये हैं थोड़े से ही, परन्तु बर्बर और धर्म हीन हैं। महाराज शेख अब्दुल्ला का सहयोग प्राप्त करें जो जनता का सही नेतृत्व कर सकते हैं।

गौरी—मैं भूलूंगी नहीं।

मेजर भीमसिंह—मीर मकबूल शेरवानी का भी नाम न भूलना। वह प्राणवान देश-भक्त काश्मीर के लिए हर तरह की कुरबानी कर सकता है।

ब्रिगेडियर - हां, हां, अवश्य। वह काश्मीर का होनहार सपूत है। आह! उस तरह के यदि और बहुत से होते।

पार्वती—और यदि हमारे सब नेता कुछ दूसरे प्रकार से भी बातों को सोचते!

ब्रिगेडियर - (सोचते हुए से) हां...ऊँ ..

पार्वती—जनरल साहब, अधिकांश मनुष्यों का एक कान कच्चा होता है और दूसरा पक्का।

ब्रिगेडियर—(विचार से चौंकता सा) यह समय शरीर विज्ञान और पोस्ट मारटम की चर्चा का नहीं है देवी।

पार्वती - सुनिये जनरल साहब, तुम भी ध्यान में रखना गौरी—हमारे अनेक नेताओं का भी एक कान कच्चा और एक पक्का होता है। साधारण मनुष्यों से थोड़ा सा और ज्यादा, पक्के कान का द्वार बन्द और कच्चे का खुला हुआ।

गौरी - पार्वती, यह सब क्या कह रही हो! मैंने तो मारने मरने की ठानी थी, पर मेरे दिमाग़ में तो ऐसी कोई अंडबंड बात नहीं उठी। जनरल साहब की अमरपुरी और मौत वाली बात तो समझ में आगई पर तुम यह किस शास्त्र की चर्चा कर उठी हो!

मेजर भीमसिंह—अमरपुरी जाने के क्षण के लिए अब बहुत देर नहीं है, इसलिए इन्हें भी कुछ कह डालने दो। डाक्टर पार्वतीदेवी, कुछ और रह गया है क्या इनसे कहने के लिए ?

ब्रिगेडियर—हां अब डाक्टर गौरी, यह स्थान शीघ्र ही छोड़ना चाहिए। शीघ्र ही ?

पार्वती—सुनिए आप दोनों, न उस समय आपके चित्त में कोई विकार था और न मेरे चित्त में इस समय है। मैं जो मरने जारही हूँ उसकी एक बात नेताओं के कान तक पहुंचनी चाहिए।

गौरी—अवश्य।
ब्रिगेडियर और मेजर—क्या ? } एक साथ]

पार्वती—कि, हमारे बड़े लोग कच्चे और पक्के कान का ठीक-ठीक उपयोग किया करें।

गौरी—हुं !

पार्वती—हुं !! हुं क्या ?

गौरी—कच्चे और पक्के कान, और, न जाने क्या क्या। (पिघल कर) पार्वती, अब भी निश्चय को बदल दो। हम दोनों श्रीनगर चलकर बहुत बड़ी देश-सेवा कर सकेंगी। चलो न बहिन ?

पार्वती—बात सुनो। नेताओं के कानों में भली और बुरी, ग़लत और सही सब तरह की बातें पड़ती हैं। रंगे सियारों की चिकनी-चुपड़ी ग़लत बातों को वे कच्चे कान की राह से हृदय में उतार लेते हैं और उसको सच्चा मान लेते हैं; तथा सचेत और सावधान करने वालों की मीठी-कड़वी परन्तु उचित और सही बातों को पक्के कान के बन्द द्वार के भीतर नहीं जाने देते।

ब्रिगेडियर—परेशान हैं बिचारे क्या करें। मेजर !

मेजर—हां—जी—(अँगड़ाई लेता है)

पार्वती—क्यों नहीं करें ? स्वार्थियों की ग़लत-सलत बातों और रंगे सियारों के चिकने-चुपड़े ढोंगों और ढकोसलों को कच्चे कान के मार्ग से हृदय में न बैठने दें। यह मार्ग केवल सचेत और सावधान करनेवालों के लिए खुला हुआ छोड़ दें; पक्के कान का बन्द द्वार ग़लत बातों के लिए है जहां वे टकराती रहें, भनभनाती रहें और अन्त में वहीं समाप्त होती रहें।

ब्रिगेडियर—हां।

मेजर—मैं भी समझ गया।

गौरी —बहिन पार्वती, बात पहले कुछ अटपटी जान पड़ी थी। अब समझ गई। जिनसे कहना है वहां तक पहुंचना मेरे लिए कठिन है, परन्तु उनके कानों तक पहुंचाए बिना न रहूंगी।

(नेपथ्य में आहट होती है। चारों सतर्क हो जाते हैं)

(अर्दली घबराया हुआ आता है)

अर्दली—(हड़बड़ी के साथ) जनरल साहब, एक दुश्मन हमारे अड्डों में होकर घुस आया था। वह पकड़ लिया गया है। परन्तु पकड़े जाने के पहले उसने हमारे एक सिपाही को घायल कर दिया है। (जनरल खड़ा हो जाता है। पार्वती और गौरी तमन्चे निकाल लेती हैं)

ब्रिगेडियर—हमारे सिपाही को घायल कर दिया है ! उसको गोली से तुरन्त उड़ादो।

(अर्दली गमनोद्यत होता है)

ब्रिगेडियर—ठहरो अर्दली। पहले उससे कुछ सवाल करेंगे। उसको लाओ।

(अर्दली जाता है)

मेजर—यह पुल पर से आ कैसे गया ? इतनी चाँदनी रात में !! इतने सतर्क अड्डों में होकर !!!

ब्रिगेडियर—और शायद पुल पर ही से अगर एक दुश्मन आ-सकता है तो वे सबके सब भी आसकते हैं। हजारों की संख्या में। कल ईद का त्योहार है। वे श्रीनगर में ईद मनाने की घोषणा कर चुके हैं। मेजर, आज रात, बस आज की ही रात, समझ गए न? पार्वती! गौरी!! तुम दोनों श्री नगर जाओ। हम लोगों के जीते जी यदि हमारी दो काश्मीरी संगिनी मारी गईं तो हमको मरने के समय व्यथा होगी।

पार्वती— दो नहीं केवल एक। ब्रिगेडियर, वह क्षण तो आपके आनन्द का होना चाहिए, क्यों कि अब आपकी बहिनें मरने की अपेक्षा मारना बहुत अच्छी तरह सीख रही हैं।

ब्रिगेडियर—ओफ़! न मालूम वह दिन कब आयगा अभी तो थोड़ा ही—

[अर्दली एक कैदी को लेकर आता है। वह कैदी पठानी वेश में है, परन्तु उसकी दाढ़ी मूछ साफ़ है। उसका सलवार खाकी है और कुर्ता साफ़ा इत्यादि हरे रङ्ग के। अर्दली उसकी बगल में बन्दूक तान कर खड़ा होजाता है। कैदी घबराया हुआ है उन दोनों स्त्रियों को उत्सुकता के साथ एक क्षण देख कर आंखें नीचे कर लेता है। ब्रिगेडियर जेब में से नोटबुक और झरनी (फाउन्टेन पैन) निकाल लेता है।]

ब्रिगेडियर—कैदी, ये दोनों देवियां कप्तान पद की डाक्टर हैं, और ये मेजर हैं—मेजर भीमसिंह। जो कुछ पूछा जाय सही जवाब देना। सच बोलने से कुछ रियायत पा सकोगे, अन्यथा गोली तुम्हारे खोपड़े को फोड़ कर प्राणों को तुम्हारे ऊजड़ पहाड़ी इलाके में आराम के साथ पहुँचा देगी। समझ गए?

कैदी—जी—हां जी—ई—

ब्रिगेडियर—अपना नाम पता इत्यादि बतलाओ।

कैदी— नाम गुलाम जीलानी रहने वाला ज़िला हज़ारा। आप का नाम मुहम्मद क़यूम जो एडीटर 'लड़ाई–भिड़ाई' अखबार के हैं।

ब्रिगेडियर— मेजर, आप लिखिए इसकी कहानी को, मैं सवाल करूंगा। केवल थोड़े से नोट लेता जाऊँगा।

मेजर भीमसिंह– जो आज्ञा।

(मेजर भीमसिंह नोटबुक और झरनी को ले लेता है)

ब्रिगेडियर— तुम खुद क्या काम करते हो? कुछ पढ़े–लिखे हो?

कैदी– जी हां। (गर्दन ऊँची करके) मैं एम० ए० हूँ। अलीगढ़ यूनीवर्सिटी से पास किया था। सरहद्दी सूबे में सरकारी पुलिस का इन्सपैक्टर हूं।

ब्रिगेडियर—अच्छा जी! मैं ब्रिगेडियर जनरल हूँ, मेजर साहब एम० ए० हैं और ये दोनों देवियां एम० बी० बी० एस० हैं, इसलिए तुम्हारी बात समझने में हमलोगों को कोई उलझन नहीं पड़ेगी। और, न तुम्हारा सिर चकनाचूर करने में भी यदि तुमने हमारे सवालों का ठीक उत्तर न दिया तो। (कैदी सिर नीचा कर लेता है)

कैदी—मैं क्या बतलाऊँ— कुछ नहीं जानता!

ब्रिगेडियर—बांधो इसके हाथ पीछे से अर्दली। (अर्दली भीम-सिंह की सहायता से उसके हाथ बांध देता है) लेजाओ इसको बाहर और उड़ादो गोली से।

(अर्दली गमनोद्यत)

कैदी—हुजूर। जनरल साहब। बे कसूर हूँ। योंही इस झमेले में फंस गया। बिलकुल यों ही।

ब्रिगेडियर—(कड़ाई के साथ) यहां किसी की जियारत करने या किसी दावत में शामिल होने के लिए आया था।

कैदी—(भयकंपित) नहीं जनरल साहब। जो कुछ मैं जानता हूँ, सब सही सही और पूरा पूरा बतलाऊँगा।

ब्रिगेडियर-- हां—यदि खोपड़े के टुकड़े टुकड़े नहीं कराना चाहते हो तो बतलाओ।

कैदी—ज़रूर, सरकार, जरूर, सरकार।

ब्रिगेडियर—कुल कितने आदमी हो? प्रधान छावनी कहां है? हथियार किस किस्म के हैं? वहां से मिले? इस उपद्रव की जड़ में क्या है और कौन है? तुम लोगों ने कहां कहां क्या क्या किया है? आगे क्या करने जा रहे हो और क्यों?

कैदी—ब्रिगेडियर जनरल साहब, सारा फसाद आजाद काश्मीर सरकार का उठाया हुआ है। पठान जो काश्मीर में घुसते चले आरहे हैं उनको पाकिस्तान रोकने की ताकत नहीं रखता—

ब्रिगेडियर—मैंने यह नहीं पूछा। होश के साथ बात करो। जो पूछा उसको बतलाओ।

कैदी—हुजूर, वही तो कह रहा हूं-वही—

ब्रिगेडियर—तब सीधे तौर पर सब बतलाते जाओ। प्राणों की चिंता हो तो। समझे?

कैदी—शुरू में हमला बाहर से नहीं हुआ। आग पहले भीतर ही सुलगी। फिर पठान आए। अब हमलोग सब मिलाकर पचास हज़ार आदमी है जो पल्टनों में बटे हुए हैं। गिलगिट, एबटाबाद, रावलपिंडी कोहाला और स्यालकोट के रास्तों से तोपें, मशीनगनें, मोटरें वगैरह मौजूदा वक्त के हथियार लाये हैं। थोड़े दिनों में दो तीन लाख हो जाएंगे।

गौरी—इस पर भी कहता है कि हमला बाहर से नहीं हुआ है!

कैदी—जी—ई क्या करूं? हमको यही जवाब सिखलाया गया है।

पार्वती—सिर को बचाना चाहे तो सब सच सच कहता जा।

कैदी—जी—ई—

ब्रिगेडियर—हूँ—इन पल्टनों के आने के पहले और कोई लोग आए ?

कैदी—जी ? जी। (चुप रह जाता है)

ब्रिगेडियर—(कड़ाई के साथ) बोलो ब्योरे के साथ बतलाओ—ये आने वाले कौन हैं ? कहां से आए ? पूरी और सही बात बतलाने पर ही कुछ रियायत पा सकोगे।

कैदी—हां जी। (खांस कर गला साफ़ करता है)

ब्रिगेडियर—(कड़क कर) बयान करो।

कैदी—कई हज़ार कबीलाई पठान कई महीने पहले से काश्मीर में धसा दिए गए थे।

ब्रिगेडियर—क्यों ? आखिर क्यों ?

कैदी—बतलाता हूं हुज़ूर। (जल्दी जल्दी) अंग्रेज सरकार कबीलाइयों सरहद्दी पठानों को गुज़र बसर या रिश्वत के तौर पर लाखों रुपया साल देती रही है। पाकिस्तानी सरकार यह रुपया नहीं देना चाहती। एक वज़ह यह है हमला करने की। दूसरी—अगर काश्मीर हिन्दुस्तान में जा मिला तो रूसी इलाके के साथ हिन्दुस्थान सरकार का नाता सीधा जुड़ जायगा; अफगानिस्तान और चीन पड़ोसी बन जायंगे—

मेजर—जल्दी मत करो, ज़रा धीमे बोलो।

कैदी—जी। बीच एशिया पर हिन्दुस्थान का असर किलिक और कराकुरम दर्रों में होकर बिलकुल सीधा पड़ उठेगा।

गौरी—इसको पाकिस्तान अपना इजारा बनाना चाहता है।

ब्रिगेडियर—(मुलायम पड़कर) क्या बारीक राजनीति की ये बातें बे पढ़े कबीलाई वगैरह समझते हैं ?

कैदी—जी नहीं। वे लोग सिर्फ एक लफ्ज़ की आवाज़ सुन चुके हैं यानी पठानिस्तान की, आज़ाद पठानिस्तान की,। पाकिस्तान नहीं चाहता कि यह ख्याल कभी भी कामयाब हो।

पार्वती—क्यों ?

कैदी—क्यों कि पठानिस्तान के अगुआ लोग रूस या हिन्दुस्थान से जा मिलेंगे और इस से पाकिस्तान को नुकसान होगा।

पार्वती—काश्मीर में लूट मार करने का क्या कारण है !

कैदी—कबीलाइयों का ध्यान काश्मीर की तरफ़ मोड़ दिया गया है, क्यों कि लूट मार उनको पठानिस्तान के ख्याल से भी ज़्यादा प्यारा है, क्यों कि इस जरिये से नए नए रंगरूट मिलते हैं।

ब्रिगेडियर—हथियार वगैरह कहां से मिले ?

गौरी—मोटरें कहां से आईं ? पैट्रोल किसने दिया ?

कैदी—मुसलिम लीग की सरकार और अफ़सरों से।

ब्रिगेडियर—लड़ाई की हिकमतें कौन बनाता है ?

कैदी—आज़ाद हिन्द फ़ौज, और सरकारी फौज के छुट्टी लिए हुए अफ़सर, मगर बुनियादी नकशे पाकिस्तान के अफसर तैयार करते हैं।

पार्वती—लूट मार करने में रियासती सिपाहियों का भी हाथ है ?

कैदी—जी हां। लूटमार का पेशा करने वाले फिर्कों के हज़ारों आदमियों में वे लोग भी शामिल होगए हैं।

ब्रिगेडियर—इस हमले में अंग्रेजों का भी कुछ हाथ है ?

कैदी—हुजूर है। सरहद्दी सूबे का गवर्नर जब बरसात के शुरू में छुट्टी लेकर काश्मीर आया तब 'आज़ाद काश्मीर सरकार' के बीज उसीने बोए। हमले की साज़िश में वह शरीक है। इंगलैण्ड हिन्दुस्थान को रूस का दोस्त नहीं बनने देना चाहता जो कि वह काश्मीर के रास्ते से बन जायगा।

ब्रिगेडियर—यहां की मुसलमानी जनता के साथ पठानों को कोई हमदर्दी है ?

कैदी—क़तई नहीं जनरल साहब। जब पठान काश्मीर और जम्मू के मैदानों और घाटियों में भर जायँगे तब यहां के रहने वालों को पठानों की हकूमत और मर्ज़ी पर चलना होगा।

पार्वती—इसपर भी कहते हैं कि काश्मीरी मुसलमानों को आज़ाद करने के लिए आरहे हैं!

कैदी—वे तो काश्मीरी मुसलमानों को काफ़िर, बजात और हेच समझते हैं।

ब्रिगेडियर—हुं—काश्मीर को बर्बाद करने के बाद फिर क्या करने की योजना है?

कैदी—फिर हिन्दुस्थान के लीगी मुसलमानों की मदद से हिन्दुस्थान को अपनी हकूमत में लाने की फ़ितरत है। क्योंकि हिन्दुस्थान को एक पुराने बीमार हाथी की मिसाल दी जाती है जो एक ज़माने से आज़ादी के साथ चलने-फिरने क़ाबिल तक नहीं है।

ब्रिगेडियर—यह गुस्ताख़ी!

कैदी—(भयकंपित) हुज़ूर, यह मेरा खुद का ख्याल नहीं है।

ब्रिगेडियर—तुम्हारी निज की बात नहीं पूछी जारही है।

पार्वती—हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली की शक्ति को नहीं जानते वे लोग?

कैदी—हुज़ूर, हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली ने तै कर लिया है कि उसका रङ्ग-रूप सोशलिस्ट रिपब्लिक का होगा। पाकिस्तान के नवाब और ज़मीदार सोशलिस्टों और कम्यूनिस्टों में कोई भेद नहीं मानते। ऐसेम्बली का उनको कोई डर नहीं। वे उससे नफ़रत करते हैं।

गौरी—नफ़रत तो उनका चाय-पानी, रोटी-शर्बत और आराम तक है।

ब्रिगेडियर—हूँ—हिन्दुस्थानी फ़ौज का कोई डर नहीं है तुमलोगों के गिरोहों को?

कैदी—कुछ खौफ़ है सरकार। मगर काश्मीर के पहाड़, नदी–नाले, जङ्गल और बर्फ़ीले तूफ़ान हिन्दुस्थानी फ़ौज को बहुत अर्से तक काम नहीं करने देंगे। तबतक कबीलाई सारी रियासत को क़ब्जे में कर लेंगे।

ब्रिगेडियर—हवाई बेड़े का भी डर नहीं है?

कैदी—बहुत डर नहीं है हुजूर, क्योंकि ज़रूरत पड़ने पर पाकिस्तान कबीलाइयों को हवाई जहाज़ भी देगा।

ब्रिगेडियर—ओफ़! यह शरारत!!! पाकिस्तानी सरकार हवाई बेड़ा देगी, अपना सिर और अपनी जेब बिना टटोले ही?

कैदी—सरकार, जेब का तो यह हाल है कि खजानों में चूहे डण्ड पेलते हैं। डाकखाने के टिकिटों, गोबर के कण्डों और अधजले सिगरेटों तक पर चोरबाज़ारी चलती है।

ब्रिगेडियर—हूँ—खैर—प्रधान छावनी कहां है? कमान कौन कर रहा है?

कैदी—पलन्द्री और गिलगिट में खास खास छावनियां हैं। कमान कर्नल रहमान कर रहा है।

ब्रिगेडियर—कर्नल रहमान! जो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लिए आंसू बहाते बहाते नहीं थकता था!! जिसकी जान कांग्रेस ने बचाई!!! खैर, तालीम कितने दिनों की है? और कहां कहां हो रही है?

कैदी—कई महीनों से एबटाबाद, रावलपिण्डी और सियालकोट में हो रही है।

ब्रिगेडियर—जनता को क्या कहकर बर्गलाया जाता है?

कैदी—लोगों से यह कहा जाता है कि जिन टैक्सों और ज़ुल्मों की चक्कियों में तुमको पीसा जारहा है उनसे छुटकारा मिल जायगा और सब को बन्दूक वगैरह रखने का सुभीता हासिल हो जायगा।

ब्रिगेडियर—हुं—अब यह बतलाओ कि तुमने कहां पर क्या क्या किया है।

कैदी— (कांपकर) मैंने तो कुछ नहीं किया, हुजूर। मैंतो मज़हब की लड़ाई समझ कर शामिल हुआ था। और लोगों ने बड़े बड़े सितम किए हैं।

ब्रिगेडियर— उन्हीं लोगों की बात पूछी जारही है।

कैदी— बिना किसी भेद भाव के हिन्दू और मुसलमानों को लूटा और मारा है। आगज़नी से गांव के गांव खाक कर दिए हैं। औरतों और लड़कियों को पकड़ ले गए हैं। उनकेसाथ—

पार्वती—कहता जा, रुकमत बेशर्मों के कीड़े!

कैदी—कहते नहीं बनता मुझ से। सैकड़ों हज़ारों के साथ बड़ी जबरदस्तियां की गई हैं। सेकड़ों मर गई। सैकड़ों को बाज़ारों में नीलाम किया गया। मुसलमान बच्चों को गुलाम बनाने के इरादे से कबीलाई इलाकों में भेज दिया गया है। लूट का माल ऊंटों, बकरों और गधोंपर लाद लाद कर भेजा जारहा है।

गौरी— मुसलमानों को भी नहीं छोड़ा?

कैदी— ज्यादा बस्ती आबादी तो मुसलमानों की है। मसजिदों तक को उन्होंने ना पाक किया। कुरान शरीफ़ की भी तौहीन की!

ब्रिगेडियर—तुम हमारी कतारों में कैसे आए?

कैदी—पुल पर से पेट के बल रेंगता हुआ।

ब्रिगेडियर—तुमने हमारे सिपाही को घायल किया?

कैदी—हुजूर उसको सौगन्ध धरवाकर पूछें। वह अपने ही जोर से टकरा कर घायल हुआ है।

ब्रिगेडियर— मेजर इसके हाथ खोलदो। (भीमसिंह उस के हाथ खोल देता है)

कैदी— (ऊपर हाथ फैला कर) मेरी छाती के पास रिवाल्वर है। (ब्रिगेडियर तुरन्त उसके रिवाल्वर को झपट कर ले लेता है।

पार्वती और गौरी अपने अपने रिवालवर हाथ में ले लेती हैं) यह भरा हुआ है । मैं चाहता तो काम में ला सकता था ।

ब्रिगेडियर- बेकार जाता, क्यों कि फिर तुम्हारी देह की धज्जियां उड़ाई जाती । तुम्हारे पास और क्या है ? मेजर जेबों को देखो ।

कैदी—इससे भी बढ़ कर खतरनाक चीज । (पार्वती और गौरी रिवालवर तान लेती हैं । भीमसिंह को कैदी सहज ही अपनी जेब से कुछ कागज़ निकाल लेने देता है)

मेजर—कुछ कागज़ हैं ।

कैदी— इनका खतरा दूसरी तरह का है । (कागज़ मेज पर फैला लिये जाते हैं । गौरी एक क़ागज को हाथ में ले लेती है)

गौरी—इन कागजों का मतलब ?

कैदी—इन कागजों में तस्वीरें है । मतलब जाहिर है । लाहौर में छापी गई हैं । इनमें दिखलाया गया है कि मुसलमानों पर हिन्दुओं और सिक्खों ने बे हिसाब और बेमिसाल जुल्म किए हैं ।

पार्वती— बिलकुल झूठ ।

ब्रिगेडियर ये कहां कहां बांटे गए हैं ? और क्यों ?

कैदी—काश्मीर, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब, मिसिर सब जगह । इन मुल्कों से आदमी, हथियार और रुपया पाने की उम्मेद से ।

पार्वती—मिसिर, अरब ईराक़ और फिलिस्तीन को घर के झगड़ों से फ़ुरसत मिलगई है ?

ब्रिगेडियर—खैर—

गौरी—(अपने हाथ वाला काग़ज़ दिखाते हुए) इस काग़ज़में क्या है?

मेजर—(काग़ज़ को देखकर) हु—हु - घोड़े पर सवार है !

पार्वती—कैदी यह क्या है ?
ब्रिगेडियर—यह क्या है ?
} एकसाथ

कैदी—दो टापें हिन्दुस्थान के नक़शे में अरब समुद्र पर दिखलाई गई हैं और दो हिन्दुस्थान पर—यानी हिन्दुस्थान को रौंद कर पाकिस्तान उस पर हुकूमत करेगा।

ब्रिगेडियर— हुं—घोड़े पर सवार कौन है ?

कैदी—पाकिस्तान का जिन।

पार्वती—अच्छा !!! घर में नहीं हैं दाने अम्मा चलीं भुनाने !!!!

ब्रिगेडियर - अच्छा गुलाम जीलानी, पूर्वीय पंजाब पर हमला क्यों नहीं किया गया ?

कैदी— फिलहाल हमला करने से हिन्दुस्थानी फौज फौरन सिरतोड़ जवाब देती, मगर किसी वक्त होगा।

ब्रिगेडियर—और किसी तरफ से भी हिन्दुस्थान पर हमला करने का इरादा किया जा रहा है, कैदी ?

कैदी—हुजूर, कह नहीं सकता। सुना है कि जैसलमेर, जोधपुर वगैरह को भी देखा जावेगा।

गौरी—हुं—और हिन्दुस्थान चुप बैठा रहेगा।

ब्रिगेडियर - अच्छा कैदी, तुमको इसी समय श्रीनगर भेजा जा रहा है। यदि वहां किसी और पूछताछ की जरूरत पड़ी तो की जायगी। मैं यहां से सिफारिश लिख रहा हूँ कि तुम्हारा प्राण न लिया जाय।

कैदी- हुजूर का हज़ार हज़ार शुक्रिया।

ब्रिगेडियर—अर्दली, कैदी को ले जाओ और बन्द रक्खो।

(अर्दली कैदी को ले जाता है। ब्रिगेडियर कुछ लिखता है और अपनी नोट-बुक में रख देता है। ब्रिगेडियर लिखे बयान को अपनी नोटबुक समेत गौरी को दे देता है।)

ब्रिगेडियर—आप श्रीनगर जाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाइए, गौरी देवी। कैदी आपके पहरे में जायगा। रसद सामान और दवाएं भी।

गौरी—मैं तैयार हूं। लारी में सामान रखने के लिए कुछ मिनट ही तो चाहिये।

ब्रिगेडियर—आप महारानी और महाराज तथा देशभर को समझा देना कि केवल कबीलाई लुटेरों का मुकाबला नहीं है। घरों में लोगों को बन्द करके जला डालने वालों का ही सामना नहीं है, बल्कि हिन्दुस्थान भर में आग लगाने की नियत रखने वालों का सामना है।

गौरी—मुझको मालूम है।

ब्रिगेडियर—यह आक्रमण शक्ति और तेजी पाकिस्तान से पा रहा है जो बेहद बेशर्मी और क्रूरता के साथ लुटेरों का सरपरस्त बन रहा है।

गौरी—इसमें कोई संदेह नहीं।

ब्रिगेडियर—बतला देना कि इन लुटेरों के अत्याचारों की कोई मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी। सैकड़ों हजारों की संख्या में मुसलमान स्त्रियों और बच्चों को भी नहीं छोड़ा है। और (रुंधे गले से) हज़ारों की तादाद में हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया है। हे शंकर भगवान, इस बीसवीं सदी में यह सब !!

गौरी—यह क्या कभी भुलाया जा सकता है ?

ब्रिगेडियर—काश्मीर के हम थोड़े से सिपाही अकेले काश्मीर की लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि सारे हिन्दुस्थान की लड़ रहे हैं। सबको पुकार पुकार कर समझाना।

पार्वती—काश्मीर हिन्दुस्थान का भाग होकर रहेगा। काश्मीर के समझदार हिन्दू मुसलमानों की यही चाह है। एक बाधा अवश्य मिटाई जानी चाहिए।

ब्रिगेडियर—बाधा !! अब भी बाधा ?

गौरी—गुरुदासपूर और पठानकोट से लगी हुई थोड़ी सी लम्बाई की ही सीमा काश्मीर को हिन्दुस्थान से मिलाती है। नाम लेने लायक भी रास्ता नहीं जहां होकर काश्मीर का माल और फल हिन्दुस्थान में जा

सके और हिन्दुस्थान की सेना काश्मीर की सहायता के लिए आ सके। जो कुछ भी भला बुरा मार्ग है वह हिन्दू मुसलमानी झगड़े के कारण सङ्कट पूर्ण है इसके लिए क्या किया जाय !

ब्रिगेडियर क्या किया जाय ? जो किया जाता है वह किया जाय लोगों को समझाया जाय और उनके होश को किसी तरह भी हाथ में रक्खा जाय। ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि काश्मीरी और हिन्दुस्थानी मुसलमान बे खटके और अकेले दुकेले, बिना किसी सन्त्री और पहरे के इस मार्ग से आ जा सकें, क्योंकि पश्चिमी और उत्तर के मार्ग अब सदा के लिए नहीं तो बरषों के लिए अवश्य बन्द हुए। पाकिस्तान गाड़ियां, हथियार, सिपाही, नेतृत्व और रसद हमारे दुश्मनों को दे ! अपनी दो सौ पचास मील भूमि के ऊपर होकर उनको सुरक्षा और आराम के साथ आने दें !! और हिन्दुस्थान की सभ्यता इस छोटे से और सकरे मार्ग को समाज विरोधी दलों से निस्सङ्कट भी न रख सके !!!

गौरी – अवश्य रख सकेगी जनरल साहब, मुझको पूरी आशा है। हिन्दुस्थान का अनन्त और अमर अलख शीघ्र जागेगा।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) तो जाओ देवी, जगाओ उस अलख को। बहुत दिनों सो चुका है। उसके जागते ही क्रूर निष्ठुर बर्बर, अपने अपने बिलों में भाग जांयगे।

गौरी—मैं जाती हूँ।

ब्रिगेडियर— अफ़सोस ! हिन्दुस्थान के विरोधियों की महत्वाकांक्षा और बुरी नियत की आगाही को गम्भीरता के साथ नहीं टटोला गया। देश द्रोही हथियार बन्द अड्डे बनाते चले गए। हम उनका मखौल उड़ा कर आत्म सन्तोष करते रहे। ओफ़ ! यह अज्ञान हमको बहुत महंगा पड़ा !!

पार्वती– अब भी संभल जांय तो समय है।

(नेपथ्य में मोटर की भर भर होती है)

ब्रिगेडियर—जाओ देवी गौरी। नमस्ते। हम एक सौ बयालीस काश्मीरियों का सारे सभ्य संसार को नमस्ते। देखो गौरी, हम लोगों का खून रक्त बीज का काम करे। इसी आशा पर हम लोग मर मिटने पर जुट पड़े हैं।

गौरी—(जाते जाते, कंठावरोध के साथ) नमस्ते जनरल। (वह आंसू पोंछती हुई जाती है) (लौटकर) नमस्ते मेजर, बहिन पार्वती नमस्ते।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—पार्वती, तुम भी चली जातीं तो हम सबको बड़ा चैन मिलता। (बैठ जाता है)

पार्वती—(चिहुंककर) आप मुझको कमज़ोर क्यों समझ रहे हैं?

मेजर भीमसिंह—कमजोर नहीं समझते हैं। नमालूम हमलोगों को फैलफुट्ट होकर कहां कहां लड़ना पड़े। आप कहीं अकेली पड़ जायंगी तो हम सब लोगों को मरने के समय चिन्ता रहेगी।

पार्वती—(और भी तिनककर) कि कहीं पार्वती को कबीलाई उठा तो नहीं ले गए! आप भी विलक्षण हैं!! आप नहीं जानते कि पार्वती हिमालय पर्वत की कन्या है हिम सदृश कठोर। राइफ़िल, रिवाल्वर, हथगोला इत्यादि सब साथ में होगा, फिर चिन्ता किस बात की?

ब्रिगेडियर—तब भी···

पार्वती—तब भी क्या? आपही सरीखे सन्देही पुरुषों ने स्त्रियों को लड़ने न देकर चिताओं पर जल जाने के लिए विवश किया। मेवाड़ के इतिहास में मैंने पढ़ा है—एक राजपूतनी ने इसी सन्देह के कारण अपना सिर अपने हाथ से काटकर पति की गोदी में डाल दिया था।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) देवी, क्षमा करो। मुझको तुम्हारी हिम्मत और हथियार चलाने की चतुराई पर पूरा भरोसा है।

(बैठ जाता है)

पार्वती—(हँसकर) मैं सरसों के तेल, आलू और चाय की पत्तियों तक से भीड़ की भीड़ को उड़ा देने वाले बम भी बनाना जानती हूँ। पकड़ भी ली गई, जो कि असम्भव है, तो मैं कहां हजारों दुश्मनों को नष्ट करके मरूंगी।

(नेपथ्य में दो धड़ाके होते हैं)

ब्रिगेडियर—हूं मेजर, समय आगया। देखो क्या है ?

(मेजर भीमसिंह जाता है)

पार्वती—यह कोई दुश्मन का दूसरा भेदिया है। दुश्मन का कोई छोटासा भी दस्ता नहीं होगा। वे पुल को ऐसी आसानी के साथ पार नहीं कर सकेंगे।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) ठीक कहती हो, देवी। मेजर के पीठ फेरते ही मेरे अन्तर्मन से भी यही बात उठी।

पार्वती—जान पड़ता है कि लड़ाई और भी विकट घोरता के साथ लड़नी पड़ेगी।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) मौक़ा तो अब आया है देवी, जब अपनी एक एक ज़िन्दगी को उनकी सौ सौ मौतों से तोलना है।

पार्वती—(खड़ी होकर) इस समय हमारे बड़े किस कल्पना या सिद्धांत के साथ तुक लगा रहे होंगे ? उनको क्या मालूम कि हमलोग किस तरह मर रहे हैं। (बैठ जाती है) परन्तु उनका क्या दोष है ? वे क्या करें ?

ब्रिगेडियर—दोष यह है कि विरोधियों की उत्पन्न की हुई समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण राजनैतिक न होकर नैतिक और आदर्शवादी रहा है, और, उन्होंने नए नए और पराक्रम पूर्ण काम करने की अपनी शक्ति को कमजोर कर डाला है।

पार्वती—परन्तु वे दृढ़तापूर्वक हमलोगों की सहायता करेंगे। सम्भव है हिन्दुस्थानी सेना इसी घड़ी आरही हो।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) इस आशा में प्राणों को मत अटकाओ, देवी। सहायता आवे या न आवे अपना कर्तव्य साफ़ है - हमको हर हालत में इन आतताइयों को पुल के उसी पार रखना है। यह क्या कम है कि हम इनके मनचाहे समय पर श्रीनगर में धसने नहीं देंगे ?

पार्वती - ठीक है जनरल, हमलोगों को मरने के बदले में इतना मिल जायगा तो बहुत है। मौत एक बार आती है केवल एक बार। डरपोक रोज़ रोज़ मरते हैं। हमलोग अपने देश के लिए मरकर जो धारा बहा जायंगे वह अभङ्ग और अखण्ड रहेगी। वह ··

[अर्दली और मेजर भीमसिंह एक कबीलाई को पकड़ कर लाते हैं। उसके दाढ़ी मूछ है। आंखें चञ्चल, परन्तु सहमी हुई। जबड़ा चौड़ा, नाक मोटी और कमानीदार। सारी आकृति दृढ़ता क्रूरता और वध-निष्ठा की। हरी पगड़ी, हरा ढीला कुरता जिस पर मोटा सलूका, उसी रङ्ग का खाकी सलवार जो काफ़ी ढीली और पांयचेदार है। इसके कपड़े कई जगह से फटे हैं। अर्दली एक ओर इस पर, बन्दूक ताने है। दूसरी ओर भीमसिंह इस पर अपना रिवाल्वर सीधा किए है। कैदी की अवस्था अधेड़ से कम है।]

मेजर भीमसिंह —इसने हमारे एक सिपाही को मार डाला है !

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) ऐं ! हमारे सिपाही को मार डाला है !! सौ वैरियों को मौत के घाट उतारने वाला एक अनमोल प्राण चला गया !!! मारदो इसको तुरन्त। (वे लोग सचेष्ट होतेहैं) ठहरो ! इससे कुछ पूछना है। कैदी, कहां का रहने वाला है ?

कैदी—वज़ीरिस्तान से भी दूर का।

ब्रिगेडियर यहां क्यों आया ?

कैदी —आया नहीं। हमको भेजा गया लूटने और मार डालने और आग लगाने और औरतों को पकड़ ले आने वास्ते और—·

ब्रिगेडियर— बेहया कहीं का ! अब इसके आगे भी कुछ और है ?

कैदी - हां है । तुमने पूच्छा अमने बतलाया । और फ़सलों को तबाह करने वास्ते, काश्मीर को आज़ाद करने वास्ते, बस । हुकुम था । अमारा कोई कसूर नहीं ।

ब्रिगेडियर—फिर मुसलमानों को क्यों मारा ? उनकी औरतों को क्यों बेइज्जत किया ?

कैदी —क्योंकि अमारे कमान अफसर को अच्छा लगा, इसलिए मारा क्योंकि जब हिन्दू मारने को नई मिला तो मुसलमानों को मार दिया, क्यां कि उसके पास पैसा और मवेशी था और अमारे पास कुच नई ।

ब्रिगेडियर—काश्मीर पर ही क्यों हमला किया ?

कैदी—अमको नहीं मालूम । हुकुम था ।

ब्रिगेडियर—काश्मीर में क्या करोगे ?

कैदी—मकानों में रहेंगे । श्रीनगर में दुम्बे पालेंगे ।

पार्वती— खेती करेगा ?

कैदी – नई करेगा । तुम अमारे साथ चलेगा तो अलबत्ता कुच तो भी करेगा ।

पार्वती—(रिवाल्वर निकाल कर) इसको खायगा ?

कैदी (भयभीत होकर) औरत गोली मारने लगा ! ओ बाबा !! अमको बतलाया गया कि औरत तो कुच कर नहीं सकता और काश्मीर का आदमी निकम्मा है ।

पार्वती—अब तुमको और तुम्हारे हुकुम देने वालों को जल्दी मालूम हो जायगा कि हम लोग तुमको कच्चा चबा जायंगे ।

कैदी—ओह ! हिन्दुस्तान का औरत इतना बुरा हो गया है ये अम को कभी नईं बतलाया गया ! अमारा सरदार बोला वो तो फूक मारने से उड़ाया जा सकता है, मगर ये तो कुच और है । बाबा !!

ब्रिगेडियर—तुम यहां किस वास्ते आया ? सच सच बतलाना ।

कैदी – अमको हुकुम था। बर्गेडियर को मार दो, कम्प में आग लगा दो, सब लोग पीछे आता है। बस।

ब्रिगेडियर—अच्छा ! ब्रिगेडियर हम ही हैं। अब देखो कौन किस को मारता है।

[कैदी छाती के पास हाथ ले जाता है। अर्दली समझ जाता है और उसकी छातीपर बन्दूक अड़ा देता है। मेजर भीमसिंह कैदी को कनपटी पर रिवाल्वर के मुंह को चिपका देता है। ब्रिगेडियर तुरन्त उछलकर कैदी का हाथ पकड़ लेता। और उसकी छाती के पास से रिवाल्वर को झपट लेता है।]

कैदी—(निराशा के स्वर में) अब अमारे पास कुछ नईं, ओफ़ ! ओ !!

मेजर—खुदाई खिदमतगार का नाम सुना है ?

कैदी – सुना है। वो तो अमारा दुश्मन है।

मेजर—हम सब को खुदाई खिदमतगार समझो। तुम्हारी खिदमत अभी हाल होती है।

ब्रिगेडियर—तुमने हमारे सिपाही को मारा ?

कैदी—(अधिक भय भीत हो कर) एँ—एँ—नईं तो। वो—वो—अमारा बन्दूक छीना। बन्दूक चल गया। वो मर गया बस।

ब्रिगेडियर—अच्छा, एक बार बन्दूक फिर चलेगी और अबकी बार तुम मरोगे। (मेजर भीमसिंह और अर्दली से) ले जाओ इस डाकू को यहां से और उड़ाओ इसका खोपड़ा। इसके जवाबों से घृणा ही और बढ़ेगी कोई लाभ नहीं अधिक परेशान करने से। (वे दोनों उसको घसीट ले जाते हैं, बाहर धड़ाका होता है और किसी के गिरने की आवाज़)

पार्वती इन लोगों को सिखलाया गया है कि गैर मुसलमान खास तौर पर और सारे काश्मीरी आम तौर पर कमजोर हैं और सहज ही

दबोचे जा सकते हैं। इसलिए इन लोगों ने इतना दुस्साहस किया… और इस लिए यह कैदी इस तरह वर्ता मानो हम लोग कुछ भी न हों।

ब्रिगेडियर—ये पहाड़ी बिल्लियां हैं। इनको समझाया गया होगा कि काश्मीरी निरे चूहे हैं।

(मेजर भीमसिंह और अर्दली आते हैं)

मेजर—जनरल साहब, अब सारा कम पुल पर लगा देना है। इस आदमी ने टेलीफोन के कई तार काट डाले हैं।

ब्रिगेडियर—ओह! चलो समय आगया है। (हँसकर) अर्दली अब हम सब लोग मौत के साथ शादी करने जारहे हैं।

अर्दली—(हँस कर) सब से पहले मैं जनरल साहब।

ब्रिगेडियर—नहीं, सबसे पहले जनरल। देखो मेरी ब्रिगेड के नाम को बट्टा न लगने पावे मेरे बाद।

पार्वती—पहले मैं जाती हूं और किसी टोली की कमान को संभालती हूं। (मुस्कराकर) अब आपको संदेह नहीं रहेगा कि न जाने मेरे पीछे किसका क्या होगा।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—ठहरो देवी! ठहरो कैप्टेन पार्वती। रुको बहन, तुम्हारा ब्रिगेडियर तुमको आदेश देता है।

पार्वती—(जाते जाते) वीर भवानी दुर्गा देवी मेरी ब्रिगेडियर हैं। अब नमस्ते। प्यारे काश्मीर और प्यारे भारत को नमस्ते।

(गई)

ब्रिगेडियर—हुं—हां—(गला साफ़ करता है उन दोनों की आँखे भर आती हैं रूमाल से पोंछ लेते हैं) दवाइयां और ज़रूरी सामान तो डाक्टर गौरी के साथ चला गया है न?

मेजर—जी हां। सब।

ब्रिगेड़ियर—अब अपने सब कीमती सामान में आग लगा दो दुश्मन के हाथ हमारी एक कौड़ी भी न लगने पावे ।

मेजर भीमसिंह—हमारे मारे जाने के बाद केवल हमारे हथियार उनके हाथ लगेंगे ।

ब्रिगेडियर - (दोनों मुट्ठियां बाधकर) यह एक चिन्ता अवश्य है ।

मेजर भीमसिंह--परन्तु शायद सहायक सेना आजावे और ये हथियार उसीके हाथ लग जावें ।

ब्रिगेडियर —और शायद हमारे शवों का दाह, क्रियाकर्म, श्राद्ध-तर्पण भी सहायक सेना करदे ! (गंभीर होकर) प्यारे मेजर अब सब प्रकार के सहारों की ओर से मन को मोड़कर परमात्मा को याद करो और जितनी देर तक हो सके इन लुटेरों, हत्यारों को नमला पुल से इस ओर मत आने दो । ये हथियार यदि इतना कर सकें तो बहुत होगया ।

मेजर भीमसिंह—दुश्मन हमारी लाशों पर ही होकर आसकेगा । मैं जाता हूं ।

ब्रिगेडियर—ठहरो भाई भीमसिंह, पहले मैं मरूंगा । इतने स्वार्थी मत बनो । मेरे सब मित्र पहले चले जायँ और मैं अकेला रह जाऊँ !

मेजर भीमसिंह— मित्रों के मारे जाने पर आपका खून और भी दमकेगा, बल और भी चमकेगा ।

अर्दली—क्या मैं आपका कोई नहीं हूँ ?

ब्रिगेडियर— (आगे बढ़कर) क्यों नहीं ? तू मेरा मित्र है, मेरा भाई है । (अर्दली को छाती से लगा लेता है)

मेजर भीमसिंह— हमारी ब्रिगेड का नाम है मौत ब्रिगेड । हम सब भाई भाई हैं । कोई छोटा बड़ा नहीं । (वे सब एक दूसरे को छाती से लगाते हैं)

(नेपथ्य में मशीनगन चलने का शब्द होता है)

ब्रिगेडियर—यह हमारी बहिन पार्वती का काम है । हमारी बहिनों और भाइयों के नाम पर काश्मीर के फूल सदा खिलते रहेंगे ।

मेजर भीमसिंह—तो चलिए हम लोग पीछे नहीं रहेंगे । छप्पन घन्टे हो गए हैं बिना नींद के । अब अकाल की गोद में सुख से सोयंगे ।

अर्दली—चलिये और कुछ मेरा भी जौहर देखिये । पहरा लगाते लगाते थक गया हूँ ।

तीनों—चलो । जय काश्मीर !

जयहिन्द !! जयहिन्द !!! जयहिन्द !!!!

(तीनों जाते हैं नेपथ्य में । मशीनगन चलने की आवाज़ होती है, और प्रकाश होता है । यवनिका गिरता है ।

❀ इति ❀

श्री वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा लिखित

※ अन्य पुस्तकें ※

—: *प्रकाशित* :—

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	६)	★कचनार	४॥)
गढ़ कुण्डार (ऐति०-उपन्यास)	४)	★धीरे-धीरे-(व्यंग) मूल्य	१)
विराटा की पद्मिनी ,,	४)	★प्रत्यागत (सामाजिक-उपन्यास)	१॥)
कुण्डली चक्र सामाजिक ,,	२)	★प्रेम की भेंट ,,	१॥)
सङ्गम ,,	२)	★कभी न कभी ,,	२॥)
लगन (अपूर्व रोमांस) ,,	१)	★हृदय की हिलोर (गद्यात्मक)	१)
फूलों की बोली (नाटक)	१॥)	★राखी की लाज (नाटक)	१)
बांस की फांस ,,	१॥)	★लो भाई, पञ्चो ! लो !! ,,	॥)

—: *शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है* :—

आनंदघन (ऐतिहासिक—उपन्यास)	★मङ्गल सूत्र नाटक
सत्तरह सौ उन्तीस ,,	★झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ,,
माधव जी सिंधिया ,,	★कब तक ,,
राणा सांगा ,,	★नील कण्ठ ,,
अचल मेरा कोई सामाजिक-उपन्यास	★पीले हाथ तथा अन्य एकांकी नाटक
हंस—मयूर नाटक	★कलाकार का दण्ड (कहानियां)
पायल ,,	★दबे पांव (शिकारी कहानियां)

मिलने का पता—

'मयूर—प्रकाशन' झांसी ।